International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 157-158

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 157-158
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-09-2018
Accepted: 23-10-2018

डॉ. सुनीता शर्मा
संस्कृत विभाग, व्याख्याता–राज. मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. सुनीता शर्मा
संस्कृत विभाग, व्याख्याता–राज. मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

वैदिक साहित्य में सरस्वती

डॉ. सुनीता शर्मा

प्रस्तावना

वेद सब सत्य विद्याओं का आकार है। इसमें लौकिक और अलौकिक दोनों ही प्रकार की सत विद्याएं मिलती है। इसमें सभी प्रकार का ज्ञान विज्ञान सूत्र रूप में समविष्ट किया हुआ है – ऐसी विद्वान मनीषियों की मान्यता है। पृथ्वी अंतरिक्ष और द्युलोक जिनके लिए ब्राह्मण ग्रंथों में हमें भू – भुवः और स्व – व्हाहृतियों का शब्द प्रयोग हुआ है, आदि जगत् के तीन विभाग वेद में किये गये प्राप्त होते है। हम लोग पृथ्वी पर निवास कर रहे है और हमारे लिये पृथ्वी का अत्यधिक महत्व है। इस पृथ्वी पर निहित समुद्र, पर्वत, नदियाँ हमारे लिये अध्ययन के विशेष विषय हो सकते हैं। वेद में इनका कहाँ, कितना, किस रूप में विवरण मिलता है इस पर प्राचीन काल से ही विद्वद्गण चिन्तन मनन करते रहे हैं। पर लगता है उनका यह ज्ञान थोड़े से भू–भाग तक ही सीमित था।

वेद युग में हमारे पूर्वज आर्यों को इस पृथ्वी के बहुत थोड़े भाग की ही जानकारी थी। ऋक् संहिता में जो भौगोलिक नाम प्राप्त होते हैं वे सभी पंजाब, काश्मीर, अफगानीस्तान के भू–भाग में निहित रहे प्रतीत होते हैं। इससे तात्पर्य यह है कि उस समय आर्यों के निवास स्थल इन्हीं प्रदेशों में थे और इनसे बाहर के किसी भी देश से उसका संबंध नहीं था। आर्य ज्यों–ज्यों आगे बढ़ते गये उनके ज्ञान में वृद्धि होती गयी। क्रमशः आर्य मध्यप्रदेश तक आगे बढ़े। ऋक् संहिता के मंत्रों से विदित होता है कि पंजाब से दक्षिण की ओर बढ़ते समय विश्वामित्र तृत्सु–भरतवंश के राजा सुदास और उसके सहयोगियों के साथ विपाशा और शुतुद्रु नदियों को पारकर मध्यप्रदेश की ओर आया। अन्य आर्य भी क्रमशः उस ओर गये। शताब्दियों तक आर्यो के प्रमुख – प्रमुख वर्ग कुरूक्षेत्र के आस–पास रहते रहे। उस समय यजुर्वेद और ब्राह्मणों के युग की सभ्यता का केन्द्र कुरूक्षेत्र और उसके पारितः का प्रदेश ही था।

शतपथ ब्राह्मण प्रथम काण्ड और चतुर्थ अध्याय के प्रथम काण्ड में हमें इस प्रदेश से आर्यो के पूर्व की ओर बढ़ने की सूचना मिलती है। सरस्वती के तट पर राजा विदेध माथव और उनके पुरोहित गौतम राहगण का अग्नि का अनुसरण करते हुए सदानीरा नदी तक पहुँचने और अग्नि के वही रूक जाने तथा राजा विदेध माथव के सदानीरा को पारकर दूसरे तट पर निवास करने की सूचना हमें इसमें मिलती है। सदानीरा नदी कोसल की सीमा बनाती थी ऐसा शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है।

इससे पहले ब्राह्मणों का वहाँ निवास नहीं था पर शतपथ ब्राह्मण के समय इस नदी के पूर्व दिग् में अनेक ब्राह्मण रहने और यज्ञ करने लगे।[1] ब्राह्मण युग में पूर्वी भारत में आर्यो का निवास अत्यधिक सीमित था पर कालान्तर में धीरे–धीरे ब्राह्मण सभ्यता का विस्तार सम्पूर्ण भारत में हो गया।

शतपथ ब्राह्मण के चतुर्थ काण्ड के अन्तर्गत वृहदारण्यक उपनिषद में विदेह राज जनक को ब्रह्मविद्या में अत्यधिक बढ़ा चढ़ा देखते हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि आर्यो को पंजाब काश्मीर और अफगानिस्तान के कतिपय भू–भाग तक का ही वेदकाल में ज्ञान था पर कालान्तर में आरण्यकों और पुराणों के काल में आर्यों के ज्ञान में और अधिक वृद्धि होती गई। उन्हें सुमेरू आदि पर्वतों और समुद्रों की भी जानकारी मिली।

नदियों के विषय में हमें वेद में पर्याप्त सामग्री मिलती हैं। सिंधु शब्द जो ऋक् संहिता में सिंधु नदी या नदी मात्र के लिए प्रयुक्त होता था संस्कृत में समुद्र के अर्थ में भी प्रयुक्त होने लगा। ऋक् संहिता और वेदों में नदियों का जिस रूप में वर्णन आया है उससे पता चलता है कि आर्य लोग नदियों के बड़े भक्त थे और उनकी बस्तियाँ नदियों के तट पर ही अवस्थित थी। वेदों में प्रमुख रूप से ऋक् संहिता में अनेक नदियों के नाम आये हैं। कतिपय नाम आज भी विद्यमान हैं तो कुछेक में परिवर्तन हो गया है। पर जिन नदियों के वेद में आजकल की तरह के नाम है उनमें से कुछेक तो अवश्यक ही आज उन नामों से भिन्न थी।

आर्य लोग ज्यों–ज्यों बढ़ते गये उन्हें नई–नई नदियों और भू–भागों से सामना करना पड़ा। वे औपनिवेशकों के रूप में अपनी प्रवृत्ति के अनुसार नवीन स्थानों के नामों से भी पुराने प्रदेशों और नदियों, पर्वतों के नामों का उपयोग करने लगे।

संपूर्ण वैदिक साहित्य में से ऋग्वेद संहिता में सर्वाधिक नदियों के नाम आये है। ऋक् संहिता में सप्त सिंधवः या सप्त स्रवतः जैसे शब्द मात्र सात नदियों के अर्थ तें प्रयुक्त हुए है पर वास्तव में तो ये नदियां सात से कही अधिक हैं। विद्वानों की मान्यता है कि ये शब्द सात प्रमुख नदियों के लिए प्रयुक्त हुए है, पर वे सात नदियां कौनसी है – इसमें ही उसमें मतभेद है सायण ने गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी नाम दिये है।[2] परन्तु गोदावरी, कावेरी, नर्मदा आदि दक्षिण भारत की नदियों के नाम तो वेद में नही है। गंगा का नाम भी मात्र एक बार आया हैं – अतः ये सात नदियाँ तो हो नही सकती। पंजाब की पांच, कुरूक्षेत्र की सरस्वती और सिंधु की सिंधु भी ये नहीं हो सकती क्योंकि पंजाब में और भी नदियाँ हैं जिसका उल्लेख ऋषियों ने किया है।

वेद में जिन नदियों के नाम आये है वे है अनितभा, असिक्नि, आपया, आर्जीकीया कुभा, क्रमु, गंगा, गोमती त्रिष्टामा, दृषद्वती, परूष्णी, मरूद्वृधा मेहलू, यमुना, यण्यावती, रथस्या, वरणावती, वितस्ता, विपाशा, विबाली शुतुद्री, श्वेत्य, सदानीरा, सरसू, सरस्वती, सिंधु, सुदामा सुवास्तु सुषोमा और सुसर्तु, शिफा, हरियूपिया।

इनमें से अनेक नदियों के विषय में विद्वान पता नक नही लगा पाये है। नदियों में सरस्वती का नाम सर्वाधिक आता है।[3]

मेरे पत्र का प्रमुख विषय वैदिक साहित्य में सरस्वती है । अतः अब मैं सरस्वती नदी पर अपनी लेखनी को केन्द्रित कर आगे बढ़ूंगी –

सरस्वती नदी का उल्लेख वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है यथा– ऋक् संहिता, तैत्तिरीय संहिता, अथर्व संहिता, तैत्तिरीय ब्राह्मण, ताण्ड्य महाब्राह्मण, मंत्रब्राह्मण, जैमिनीय ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, शाड्.,खायन ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि

ऋक् संहिता के सभी सूक्त एक काल के नही है। विद्वानों की मान्यता है कि ऋक् संहिता में विभिन्न युग की रचनाएँ है और उनमें सबसे प्राचीन और सबसे अवाचीन मंत्रों के काल में बहुत ही अन्तर है। ऋक् संहिता के प्राचीन अंश में यथा –

2/30/8, 5/43/11, 6/49/7, 6/52/6, 6/61, 7/36/6, 7/39/5, 7/95, 7/96 सरस्वती का वर्णन मिलता है परन्तु यह सरस्वती नदी वर्तमान की सरस्वती नदी नही है। अपितु सिंधु नद है।[13] पं. क्षेत्रेश चन्द्रचट्टोपाध्याय के अनुसार आवेस्ता में और प्राचीन ईरानी शिलालेख में सिंधु के पूर्व तट वाले एक प्रान्त के लिए हरह्वइती (ळतममा ।तवबीवेपं) नाम आया है। इरानी हरह्वइती और सरस्वती एक ही शब्द के दो रू‍प हैं। ऋक् संहिता (7/95/3) और (7/96/4–6) में सरस्वती के साथ सरस्वान की स्तुति की गई है।

अतः सरस्वान् सिन्धु नद के दक्षिण भाग का नाम प्रतीत होता है। सरस्वान की स्तुति ऋक् संहिता – 1/164/52 में व 10/66/5 में भी की गइ है। परन्तु ऋक् संहिता – 3/23/4, 10/64/9 और 10/75/5 में और तैत्तिरीय संहिता, ताण्ड्य महाब्राह्मण आदि ब्राह्मणों तथा बाद के साहित्य में नदी वाचक सरस्वती शब्द कुरूक्षेत्र की वर्तमान सरस्वती नदी के लिये आया है, जिसकी विद्वान खोजी खोज कर रहे है।

ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वामित्र के साथ शुतुद्री को पार करके दक्षिण पार सें आये भरतों ने ही कुरूक्षेत्र की इस नदी को सरस्वती नाम दिया होगा और कालान्तर में उनके अनुकरण पर आर्य जातियों में सरस्वती नाम का प्रयोग वर्तमान सरस्वती के लिए किया गया।[14] तब सिंधु नद को जो सरस्वती और सिंधु के दोनों नामों से प्रसिद्ध थी, लोग केवल सिंधु नाम से कहने लगे। कुरूक्षेत्र की सिंधु नदी आजकल पंजाब के पटियाला क्षेत्र में लुप्त हो गई। पौराणिकों के मतसे उसकी एक धारा भूमि के अन्दर बहती हुई प्रयाग में गंगा और जमुना के साथ सम्मिलित हुई मानी जाती है। ऋग्वेद के समय यह सरस्वती संभवतः सिन्धु में सम्मिलित होकर पश्चिम समुद्र (अरब सागर या रत्नाकर) में पहुँचती थी। ब्राह्मण युग में कुछ अंश के रूप लिये लुप्त होकर पुनः पश्चिम की ओर चलती थी। ताण्ड्य ब्राह्मण में सरस्वती के विनशन का अर्थात् लुप्त होने का और जैमिनीय ब्राह्मण में उसके उपमज्जन का अर्थात् पुनः अपर निकल आने का स्थान उल्लिखित है। जैमिनीय ब्राह्मण में 'सरस्वती का शैशव' का अर्थात् जिस स्थान पर सरस्वती की क्षीण धारा में सर्वप्रथम बहती है, का उल्लेख हैं। ऐतरेय ब्राह्मण आदि से ज्ञात होता है कि सरस्वती से कुछ ही दूरी पर मरूदेश अवस्थित था। यह मारवाड़ के नाम से आज प्रसिद्ध है।

मरूभूमि में लुप्त होकर यह नदी अनेक धाराओं में अनेक दिशाओं में बहने लगी होगी – ऐसा आभास होता है। अरावली पर्वत से अनेक स्थानों से निकल कर बह रहे स्रोत इन धाराओं में मिलकर सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हो गये। लूणी या लवणावती भी ऐसी ही धारा है। जिसका उद्‌गम अरावली से है। पौराणिकों की इस मान्यता में भी कुछ सत्य का अंश प्रतीत होता है जिसमें यमुना और गंगा के साथ सरस्वती को भी प्रयोग में संगम बनाकर त्रिवेणी का रूप धारण करते देखते है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुरूक्षेत्र में लुप्त होकर सरस्वती की कोई धारा मरूभूमि में स्थान–स्थान पर झीले बनाती हुई पूर्व की ओर प्रवाहित होती रही है। सांभर, डीडवाना आदि की नमक की झीलें इस धारा के मध्य के स्थान रहे होंगे।

जयपुर के पास बहता अमानीशाह का नाला और सांगानेर की सरस्वती नदी भी उसी की धारा रही होगी। यह धारा जयपुर के दक्षिण में बहती हुई व्यापक क्षेत्र को घेरे रही होगी। जयपुर, अजमेर मार्ग पर निम्न भू क्षेत्र के तट पर स्थित 'नाशन' नाम का स्थान हमें विनशन से साम्य अर्थ रखता प्रतीत होता है। सरस्वती की यही धारा पूर्व में बनास आदि के रूप में यमुना के समकक्ष बहती हुई प्रयाग तक गई हो तो भी आश्चर्य नहीं । सरस्वती की खोज में तल्लीन विद्वदगण इस पर विचार करें ?

सरस्वती का एक अर्थ होता है सरस् – नमक वाली भी है सिंधु के प्रदेश में उत्पन्न नमक का सैधव नाम इससे साम्य रखता है। राजस्थान में आज भी नमक के लए 'रस' शब्द प्रयुक्त होता है। यह भी सरस का ही विकृत रूप है।

सहायकग्रन्थसूची

1. शतपथ ब्राह्मण 1/1/4/14/16
2. गंगेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरू।
3. मनुस्मृति – 2/17
   सरस्वती दृषद्वत्यो देवनद्योर्यदन्तरम्।
   तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्त प्रचक्षते।।
4. ऋक् संहिता में 1/89/3, 1/163/49, 2/3/8, 2/32/8,
   2/41/18, 2/23/4, 3/53/13, 5/42/12, 5/43/11
   5/46/2, 6/50/12, 6/52/6, 6/61/1–7–10–11–14,
   7/95/1–2–4–5, 8/96/1–3, 8/21/17–18
5. तैत्तिरीय संहिता – 7/2/1/4
6. अथर्व संहिता – 6/30/1
7. तैत्तिरीय ब्राह्मण – 2/4/16
8. ताण्ड्य महाब्राह्मण – 25/10/1–16
9. मंत्रब्राह्मण – 2/1/16
10. जैमिनीय ब्राह्मण – 2/297, 3/1/20
11. ऐतरेय ब्राह्मण – 2/19
12. शाड्.,खायन ब्राह्मण – 12/3
13. शतपथ ब्राह्मण – 1/4/, 1/14 आदि
14. पं. क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय – The identification of the Rigveda River Sarasvati and Some Connected Problems.
15. दिवाकर वेदांक में प्रकाशन – पं. क्षेत्रेशचन्द्र का लेख 'वैदिक भूगोल'